ईश्वर का आवाहन : 'गायत्री मन्त्र' पर एक व्याख्या

तीन दशकों से भी अधिक समय से, गुरुमाई जी सिद्धयोगियों को यह सिखाती आई हैं कि सिद्धयोग परम्परा व संस्कृति के पवित्र अभ्यासों के साथ किस प्रकार कार्यरत हों। इनमें से एक अभ्यास है, गायत्री मन्त्रों का पाठ।

भारत की वैदिक परम्परा में, गायत्री मन्त्रों को किन्हीं विशिष्ट देवी या देवता की उपस्थिति का पूर्ण रूप से आवाहन करने का एक शक्तिशाली माध्यम माना जाता है। कहा जाता है कि ये मन्त्र उन देवी या देवता की सम्पूर्ण शक्ति को नादरूप में घनीभूत करते हैं और इसलिए इनमें रूपान्तरण करने का सामर्थ्य समाहित होता है। ये न केवल उन देवी-देवता की शक्ति की ऊर्जा से भरे हैं, बल्कि प्रार्थना के रूप में इनकी रचना होने के कारण ये संकल्प से भी परिपूर्ण हैं। इन मन्त्रों का जप करने से, हम प्रार्थना करते हैं कि हमें प्रेरणा मिले, हम सशक्त हों और उन विशिष्ट देवी-देवता के दिव्य गुणों को स्वयं में पहचानने में समर्थ हों। सिद्धयोग पथ पर, इन देवी-देवताओं को उस एक दिव्य चिति के विभिन्न पहलुओं के रूप में जाना जाता है जो समस्त सृष्टि में व्याप्त है।

पारम्परिक वैदिक ग्रन्थों में संस्कृत शब्द 'गायत्री' को इस प्रकार परिभाषित किया गया है -

गायन्तं त्रायते इति गायत्री।

— इसे गाने वाले की जो रक्षा करता है, वह है 'गायत्री'।

संस्कृत शब्द 'त्रायते' का अर्थ है, '[वह जो] रक्षा करता है' और यह शब्द 'वह जो मोक्ष प्रदान करता है या तारता है' इस अर्थ का भी सूचक है। इसलिए ऐसे मन्त्र का जप करने से यह मन्त्र, जप करने वाले की रक्षा करता है, मन को उसके स्रोत यानी शुद्ध चिति की ओर निर्देशित कर मन के स्वरूप के प्रति साधकों की सीमित समझ से उनकी रक्षा करता है।

गायत्री मन्त्रों के कई विशिष्ट गुण हैं। ॐ जो आदि नाद है, पारम्परिक तौर पर यह, गायत्री मन्त्र के हर आवर्तन से पूर्व होता है। इन मन्त्रों में भी तीन मुख्य शब्द होते हैं, प्रत्येक शब्द क्रम से प्रत्येक पंक्ति में आता है।

विद्महे — 'हम जानें व समझें'

धीमहि — 'हम अपने अन्दर स्थापित [धारण] करें'

प्रचोदयात् — 'वह हमें प्रेरित व अनुप्राणित करे'

मूल 'गायत्री मन्त्र,' वह आवाहन है जिसका सर्वप्रथम उल्लेख प्राचीन ग्रन्थ 'ऋगवेद' में मिलता है और कहा जाता है कि अन्य देवी-देवताओं को समर्पित 'गायत्री मन्त्रों' की उत्पत्ति विशेष रूप से इसी मन्त्र से हुई है या वे इसी मन्त्र से प्रेरित हैं :

ॐ भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥

ॐ। हे पृथ्वी, आकाश और स्वर्ग!
हम अपने अन्तर में दिव्य सावित्री अर्थात् सूर्यदेवता की प्रभा को स्थापित करें,
जो फिर हमारे अन्तर-बोध को अनुप्राणित करेंगे।

— ऋग्वेद [३.६२.१०]

'श्री आदिगायत्री मन्त्र' के नाम से और कभी-कभी सूर्य-गायत्री मन्त्र के नाम से भी जाना जाने वाला यह मन्त्र, वैदिक मन्त्रों में सबसे पुरातन व सबसे शक्तिशाली माना जाता है। इस परम्परा के अन्तर्गत इसे 'वेदमाता' यानी समस्त वैदिक मन्त्रों की माँ या "सम्पूर्ण ज्ञान की माता" कहकर इसका सम्मान किया जाता है। यह दीक्षा-मन्त्र भी है जो एक ब्राह्मण बालक को अपना वैदिक अध्ययन आरम्भ करते समय प्राप्त होता है। परम्परागत तौर पर किए जाने वाले इस अनुष्ठान को 'उपनयन' संस्कार कहा जाता है। कहा जाता है कि इस मन्त्र को प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी का "दोबारा जन्म" होता है; वेदों का अध्ययन करने की उसकी आध्यात्मिक दीक्षा, उसका दूसरा जन्म होता है।

इस 'गायत्री मन्त्र' के महत्त्व व उसके सामर्थ्य को समझते हुए, ऋषियों ने लगभग उन सभी देवी-देवताओं को 'गायत्री मन्त्र' समर्पित किए हैं, जिनकी भारत में पूजा होती है। ये मन्त्र, इन ऋषियों के सम्मुख गहन ध्यान की अवस्था में प्रकट हुए थे।

"गायत्री" एक काव्यात्मक छन्द का भी नाम है जिसे "गायत्री छन्द" कहा जाता है। वैदिक ग्रन्थों में पाए जाने वाले छन्दों में यह एक मुख्य छन्द है। इसमें तीन पंक्तियाँ होती हैं और हर पंक्ति में आठ वर्ण होते हैं। प्राचीन वैदिक परम्परा में, छन्द को अति महत्त्वपूर्ण माना जाता था और वैदिक मन्त्रों की संरचना विशिष्ट छन्दों में की गई है जिनका सुनने वालों पर एक निश्चित प्रभाव पड़ता है। 'छन्द' शब्द की व्युत्पत्ति मूल शब्द 'छद' से होती है, जिसके दो अर्थ हो सकते हैं, पहला, "अच्छादित व संरक्षित करना" और दूसरा, "सन्तुष्ट करना व प्रसन्नता देना" इसलिए कहा जाता है कि छन्द, सुनने वाले का संरक्षण भी करते हैं और उसे प्रसन्नता भी देते हैं। गायत्री छन्द के विषय में कहा गया है : गायत्री आठ वर्णों का मन्त्र है; गायत्री शक्ति-सामर्थ्य है और परब्रह्म की प्रभा है; अतः इससे शक्ति-सामर्थ्य व परब्रह्म की प्रभा की प्राप्ति होती है।[१]

'गायत्री मन्त्र' को और स्वयं गायत्री छन्द को साक्षात् भगवती गायत्री देवी माना जाता है जो भगवान की सृजन-शक्ति का मूर्तरूप हैं। इस कारण, कुछ पुराणों में उन्हें शक्ति के रूप में और ब्रह्माण्ड का सृजन करने वाले भगवान ब्रह्मदेव की पत्नी के रूप में दर्शाया गया है। इसीलिए यह कहा जाता है कि यह विशिष्ट छन्द, इनमें से प्रत्येक मन्त्र को शक्ति या चिति के सृजनात्मक तेज से अनुप्राणित करता है और उन्हें विशेष रूप से प्रभावशाली बनाता है।

परम्परागत तौर पर 'श्री आदिगायत्री मन्त्र' दैनिक पूजा के समय गाया जाता है या मन्त्र-जप के लिए इसका उपयोग होता है, विशेषकर 'सन्ध्यावन्दन' के समय, यानी प्रतिदिन सुबह और शाम को ब्राह्मणों द्वारा सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय किए जाने वाले अनुष्ठान। भारत में, ब्राह्मणों के लिए वैदिक यज्ञों के भाग के रूप में और लोगों के लिए मन्दिरों व घरों में मण्डली के साथ मिलकर, 'गायत्री मन्त्रों' को गाना आम बात है।

सिद्धयोग पथ पर, गुरुमाई जी ने महोत्सवों और पर्वों पर 'गायत्री मन्त्रों' का जप आरम्भ किया है, जिनमें प्रतिभागी इन मन्त्रों के जप में भाग लेते हैं। इन 'गायत्री मन्त्रों' का अभ्यास हम स्वयं ही मौन मन्त्र-जप के रूप में भी कर सकते हैं, ख़ासकर ध्यान में प्रवेश करने से पहले। अपने ध्यान के अभ्यास

के दौरान, यदि हम उनके उच्चारण को पूरी एकाग्रता व ध्यानपूर्वक सुनते हैं तो वे ध्यान के लिए हमारा केन्द्र-बिन्दु भी बन सकते हैं।

'गायत्री मन्त्र' का जप करते समय हम ईश्वर के स्वरूप में उन देवी-देवता का आवाहन करते हैं जिन्हें मन्त्र समर्पित है और हम अपने अन्दर उन देवी-देवता के दिव्य सद्गुणों और पहलुओं की स्तुति करते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि हम ध्यान द्वारा इस दिव्य उपस्थिति को जान सकें और उसे प्राप्त कर सकें तथा हम उसकी शक्ति से सदैव प्रेरित व मार्गदर्शित होते रहें।

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

[१] ताण्ड्यमहाब्राह्मणम् XV १.८